श्री शरभ शालुवराज प्रयोग

श्री शरभ शालुवराज का वर्णन श्री शिव पुराण में आया है। इन्हें पक्षिराज, आकाश भैरव आदि नामों से भी जाना जाता है। इस सम्बन्ध में काफी समय पूर्व एक ग्रंथ प्रकाशित हुआ था, जिसका नाम था- आकाश भैरव कल्प । इस ग्रंथ की मैंने काफी खोज की परन्तु यह उपलब्ध नहीं हो सका। यदि किसी सज्जन के पास यह प्रति उपलब्ध हो तो कृपया अवगत कराने का कष्ट करें।

श्री शिव पुराण के अनुसार जिस समय नृसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यपु को मार डाला तो उन्हें कुछ घमंड हो गया और प्रजा व देवता उनसे दुखी हो गये। उन्होंने भगवान नृसिंह की प्रार्थना भी की लेकिन उन्होंने अपने अत्याचार जारी रखे। अन्त में सब देवता लोग भगवान शिव के पास गये और उन्हें अपनी व्यथा बतायी। तब भगवान शिव ने अपना ऐसा स्वरूप बनाया जो एक ऐसे पक्षी का था, जिसका मुख उल्लू के समान था। उसके तीनों नेत्रों में अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा का निवास था। उसका धड मनुष्य के समान था जो अपने चार हाथों में विशेष आयुध धारण किये हुए था। उसके नाखून वज्र के समान तीखे और उसके दो पंखों में मां काली और दुर्गा का निवास था। उसके हृदय में जठरानल और पेट में बडवानल जैसी भयंकर अग्नियों का निवास था, उसकी कमर के बाद का भाग किसी हिरण के समान एवं उसकी पूंछ किसी उग्र सिंह के समान लम्बी थी, उसके उरू में बीमारी और मृत्यु की उपस्थिति थी। भगवान शिव के ऐसे स्वरूप ने भगवान नृसिंह को चोंच मारकर मूर्छित कर दिया, अपनी पूंछ से भगवान नृसिंह के दोनों पैर बांध दिये, अपने दोनों पिछले पद भगवान नृसिंह के पैरों पर रखें और अपने अग्रपादों को नृसिंह देव की छाती पर और अपने हाथों से नृसिंह भगवान के हाथों को पकडकर आकाश में ले गये और उस समय निसहाय होकर भगवान नृसिंह अर्थात भगवान विष्णु ने उनकी स्तुति की और अपने स्वरूप का विसर्जन किया तब भगवान शिव ने प्रसन्न होकर

उन्हें मुक्त किया और भगवान शिव के आशीर्वाद से उन्होनें अपना स्वरूप धारण किया।

यह बताना मेरा कर्तव्य है कि भगवान शरभ शालुव राज का प्रयोग भगवान नृसिंह से कई गुना अधिक घातक है। जो व्यक्ति इसके प्रयोग की कामना करता है, उसे उच्च कोटि का साधक होना अत्यावश्यक है। यदि कोई व्यक्ति इस शक्ति का साधन करना चाहता है तो उसे आत्मरक्षार्थ कवच एवं भगवान महामृत्युंजय मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ-2 यह ध्यान रखना परमावश्यक है कि जंहा यह प्रयोग किया जाये, वंहा भगवान विष्णु की मूर्ति अथवा विग्रह नहीं होना चाहिए।

अपने किसी शिष्य के अनुरोध पर मैं यह शत्रु निग्रह प्रयोग यंहा दे रहा हूँ, जिसे श्री आकाश भैरव चित्रमाला मंत्र के नाम से जाना जाता है। अपने शत्रुओं के नाश के लिए यह प्रयोग किया जाता है। इसे आरम्भ करने से पूर्व अपने गुरूदेव एवं इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर निम्नांकित मंत्र के 108 पाठ करें। सामान्य कार्य सम्पादन के लिए 7 पाठ ही पर्याप्त हैं।

सर्व प्रथम अपने दायें हाथ में जल लेकर विनियोग करें, यथाः-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री आकाशभैरवस्य चित्रमाला नाम मंत्रस्य श्री आनन्द भैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री आकाश भैरव देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्तिः, मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे जपे विनियोगः।

हाथ का जल भूमि पर छोड दें। इसके बाद ऋष्यादि न्यास करेंः-

ॐ श्री आनन्द भैरव ऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ आकाश भैरव देवतायै नमः हृदि, ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ हुं शक्तयै नमः पादयोः, ॐ मम अमुक नामकं शत्रु विनाशार्थे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके उपरान्त कर-न्यास करें-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

इसके बाद अंग न्यास करें:-

ॐ ह्रां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं कवचाय हुं, ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय-वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

न्यास आदि करने के उपरान्त साधक को निम्नवत् ध्यान करना चाहिए-

ध्यान

सहस्रपाणि-पद-वक्त्रं, सहस्त्र-त्रय लोचनम् ।
सर्वाभिष्ट प्रदं देवं, स्मरेद् आकाश-भैरवम्।।

।। माला मंत्र।।

ॐ नमो भगवते आकाश भैरवाय निखिल-लोकप्रियाय प्रणत जन-परिताप-विमोचनाय सकल भूत निवारणाय सर्वाभिष्ट प्रदाय नित्याय सच्चिदानन्द-विग्रहाय सहस्त्र बाहवे सहस्त्र मुखाय सहस्त्र त्रिलोचनाय सहस्त्र चरणाय करालाय अखिलरिपु संहार कारणाय अनेक कोटि ब्रह्मकपाल माला अलंकृताय नर रूधिर मांस भक्षणाय महा बल पराक्रमाय महा दन्तराय विष विमोचनाय पर मत्रं तंत्र यंत्र विद्या विच्छेदनाय प्रसन्न वदनाम्बुजाय ऐह्येहि आगच्छागच्छ ममाभीष्टं आकर्षय आकर्षय आवेशय आवेशय मोहय मोहय भ्रामय भ्रामय द्रावय द्रावय तापय तापय सिद्धय सिद्धय बंधय बंधय भाषय भाषय क्षोभय-क्षोभय भूत-प्रेतादि-पिशाचान् मर्दय-मर्दय कुर्दम-कुर्दम पाटय-पाटय मोटय-मोटय गुम्फय-गुम्फय कम्पय-कम्पय ताडय-ताडय त्रोटय-त्रोटय भेदय-भेदय छेदय-छेदय चण्ड-वातांति-वेगाय सन्तत-गम्भीर-विजृम्भणाय संकर्षय-संकर्षय संक्रामय-संक्रामय प्रवेशय-प्रवेशय स्तोभय-स्तोभय स्तंभय-स्तंभय तोदय-तोदय खेदय-खेदय तर्जय-तर्जय गर्जय-गर्जय नादय-नादय

रोदय-रोदय घातय-घातय वेतय-वेतय सकल रिपु-जनान्छिंदि-छिंदि भिन्दय-भिन्दय अन्धय-अन्धय रून्धय-रून्धय नर्दय-नर्दय बंधय-बंधय श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याण-कारणाय श्मशानानंद महाभोग-प्रियाय देवदत्तं (शत्रु का नाम लें) आनय-आनय दूनय-दूनय केलय-केलय मेलय-मेलय प्रपन्न वत्सलाय प्रति वदन दहनामृत किरण नयनाय सहस्त्र कोटि वेताल परिवृताय मम रिपून् उच्चाटय-उच्चाटय नेपय-नेपय तापय-तापय सेचय-सेचय मोचय-मोचय लोटय-लोटय स्फोटय-स्फोटय ग्रहण-ग्रहण अन्नत-वासुकी-तक्षक कर्कोटक -पद्म-महापद्म-शंख-गुलिक-महानाग भूषणाय स्थावर-जंगमानां विषं नाशय-नाशय प्राशय-प्राशय भस्मी-कुरू भस्मी-कुरू भक्तजन-वल्लभाय सर्व-स्थिति-संहारकारणाय कथय-कथय सर्व-शत्रून उद्रेकय-उद्रेकय विद्वेषय-विद्वेषय उत्सादय-उत्सादय बाधय-बाधय साधय-साधय दह-दह पच-पच शोषय-शोषय पोषय-पोषय दूरय-दूरय मारय-मारय भक्षय-भक्षय शिक्षय-शिक्षय समस्त भूतं शिक्षय-शिक्षय श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत-ताण्डवाय आपद-उद्धारणाय साधु-जनान् तोषय-तोषय भूषय-भूषय पालय-पालय शीलय-शीलय काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यं शमय-शमय दमय-दमय त्रासय-त्रासय शासय-शासय क्षिति-जल-दहन-मरूत-गगन-तरणि-सोमात्म-शरीराय शम-दमोपरति तितिक्षा-समाधान-श्रद्धां दापय-दापय प्रापय-प्रापय विघ्न-विच्छेदनं कुरू-कुरू रक्ष-रक्ष क्ष्म्रयै क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

++++++++

उपरोक्त पाठ करने से पूर्व अपने गुरूदेव का ध्यान करके अपने इष्ट देवता का पूजन करने के बाद उक्त माला मत्रं का 101 बार पाठ करने से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। सामान्य कार्य हेतु मात्र 7 पाठ ही पर्याप्त हैं ।

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com

Web : www.anusthanokarehasya.com

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. **Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

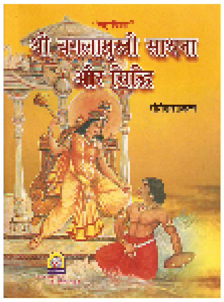

2. **Mantra Sadhna**

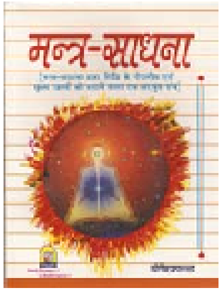

3. **Shodashi Mahavidya**